IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत में मानव विकास एवं जनांकिकीय लाभांश

डॉ गरिमा सिंह

सहायक प्राध्यापक–अर्थशास्त्र

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सतना (म.प्र.) 485001

।इेजतंबज .

किसी भी देश की युवा जनसंख्या उस देश की अर्थव्यवस्था का आधार है। भारत में कार्यकारी आयु वर्ग (15 वर्ष से 64 वर्ष) में लगातार वृद्धि हो रही है। जो वर्तमान में 68 प्रतिशत है। अर्थशास्त्री इसे जनाकिकीय लाभांश (क्मउवहतंचीपब क्मअपकमदज) की संज्ञा दे रहे हैं। हमें जनांकिकीय लाभांश की फल की प्राप्ति तभी हो सकती है, जब कार्यकारी जनसंख्या शिक्षित, स्वस्थ व कुशल हो। लेकिन वास्तव में हम मानव विकास ;भ्नउंद क्मअमसवचउमदजद्ध में बहुत पीछे हैं। अर्थात 134वें पायदान पर स्थिति हैं। श्रीलंका, चीन जैसे शक्तिशाली राष्ट्र को भी मानव विकास में पीछे छोड़ दिया है। प्रस्तुत शोध पत्र में मानव विकास, जनांकिकीय लाभांश आदि की दशा एवं दिशा पर प्रकाश डाला गया है।

ज्ञमलूवतके .

मानव विकास, मानव विकास सूचकांक;भ्क्प्द्ध, जनांकिकीय लाभांश, आर्थिक संवृद्धि, जीवन प्रत्याशा, प्रतिव्यक्ति आय, निर्भरता अनुपात।

प्दजतवकनबजपवद .

आज मानव विकास एक सबसे बड़ी चुनौती है क्योंकि आर्थिक विकास का अंतिम लक्ष्य मानव विकास ही है। प्राचीन काल में तक्षशिक्षा एवं नालान्दा विश्वविद्यालय मानव विकास में अपना अमूल्य योगदान दे रहे थे। इन विश्वविद्यालयों में देश–विदेश के मेधावी छात्र प्रवेश लेते थे। स्वतंत्र विचार, मौलिकता, नवप्रवर्तन आदि के लिए यहाँ के छात्र विश्वविख्यात थे। लेकिन इन विश्वविद्यालय के नष्ट होने के बाद भारत मुगलों एवं अंग्रेजों का गुलाम रहा और मानव विकास अवरूद्ध हुआ। स्वतंत्रता के बाद मानव विकास की ओर ध्यान दिया गया है लेकिन अभी भी मानव विकास (शिक्षा व स्वास्थ्य) पर जी.डी.पी. का बहुत थोड़ा भाग (3.9 प्रतिशत) ही व्यय किया जा रहा है, जो चीन (5.2), ब्राजील (8.9), नेपाल (5.4) जैसे देशों से भी कम है।

स्वतंत्रता के बाद नीति निर्धारकों का मत था कि आर्थिक संवृद्धि से अपने आप मानव का विकास होगा क्योंकि आर्थिक संवृद्धि का लाभ अपने आप रिसकर निचले गरीब तबकों तक जायेगा, और उनका विकास करेगा। इसे रिसाव प्रभाव (ज्तपबांस कूंद मििमबज) कहा गया। इस रिसाव प्रभाव पर नीति निर्धारकों का इतना विश्वास था कि चौथी पंचवर्षीय योजना तक गरीबी एवं बेरोजगारी पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया गया अर्थात इनको प्राथमिक उद्देश्यों में जगह नहीं मिल सकी। पांचवी पंचवर्षीय योजना में ही जगह मिल सकी जब 'गरीबी हटाओ' का नारा लगाया गया। और यह नारा तब लगाया गया जब नीति निर्धारकों को यह विश्वास हो गया कि ट्रिकल डाउन इफेक्ट भारत में असफल है और समस्या पर प्रत्यक्ष प्रहार करके ही समस्या को समाप्त किया जा सकता है। ट्रिकल डाउन इफेक्ट समस्या का समाधान नहीं है। जहाँ एक ओर भारत आर्थिक संवृद्धि में कई देशों को पीछे छोड़ दिया है, चीन भी भारत से पिछड़ गया है, लेकिन वहीं दूसरी ओर मानव विकास में भारत श्रीलंका, मलेशिया, मॉरीशस, ब्राजील, चीन आदि जैसे देशों से पीछे रह गया हैख् जो आर्थिक संवृद्धि में भारत से बहुत पीछे हैं। हाल ही के वर्षों में विकास अर्थशास्त्रियों का ध्यान आर्थिक संवृद्धि से हटकर मानव विकास पर केन्द्रित हुआ है। मानव विकास के बिना आर्थिक विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। जैसा कि टी डब्ल्यू शुल्ज और अमर्त्य सेन का कहना है कि मानव पूंजी में निवेश (अर्थात शिक्षण पर व्यय) से आर्थिक विकास में तेजी आती है। वास्तव में कुछ नीति निर्माता व अर्थशास्त्री आर्थिक वृद्धि और मानव विकास को एक मानकर चलते है और उनका कहना है कि आर्थिक वृद्धि से मानव विकास अपने आप हो जाता है। लेकिन वास्तव में दोनों में अंतर है और इस अंतर को स्पष्ट करते हुए महबूब उल हक ने कहा है कि आर्थिक वृद्धि एवं मानव विकास की विचारधारा में परिभाषात्मक अंतर यह है कि जहाँ आर्थिक संवृद्धि में केवल एक विकल्प अर्थात आय पर ही ध्यान केन्द्रित किया जाता है, वहीं 'मानव विकास' में सभी मानवीय विकल्पों का विस्तार आ जाता है ये विकल्प चाहे आर्थिक, सामाजिक, संस्कृतिक अथवा राजनीतिक हों। आर्थिक संवृद्धि का सही मूल्यांकन करने के लिए मानव विकास का मूल्यांकन आवश्यक है। इसके मूल्यांकन के लिए मानव विकास सूचकांक बनाया गया है। यह मानव विकास सूचकांक (भ्क्प्) मानव विकास के संदर्भ में तीन मूलभूत आयामों के क्षेत्र में उपलब्धियों का माप करता है। ये तीन मूलभूत आयाम है– जीवन प्रत्याशा, साक्षरता दर और प्रतिव्यक्ति आय (क्रय शक्ति समतानुसार अमेरिकी डालर में)।

व्इरमबजपअमे .

1. भारत में मानव विकास का अध्ययन करना।
2. भारत व भारत के पड़ोसी देशों के मानव विकास का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. भारत में जनांकिकीय लाभांशों का अध्ययन करना।

त्मेमंतबी डमजीवकवसवहल .

यह शोध पत्र द्वितीयक समंको पर आधारित है। द्वितीयक समंको का संकलन योजना आयोग की रिपोर्ट, विश्व बैंक की रिपोर्ट, यू.एन.डी.पी. की रिपोर्ट, आर्थिक सर्वेखण, राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण की रिपोर्ट, संबंधित पुस्तकों, शोध पत्रिकाओं से किया गया है। समंको के विश्लेषण के लिए प्रतिशत, अनुपात आदि का सहारा लिया गया है।

भारत में मानव विकास एवं पड़ोसी देशों के मानव विकास से तुलना –

न्छक्च् की रिपोर्ट 2022 के अनुसार मानव विकास सूचकांक में भारत 0.633 अंक प्राप्त कर, 193 देशों की सूची में 134 वें पायदान पर है। इस रिपोर्ट में विकास बनाम विषमता प्रमुख रूप से उभरी है, जो भारत के पिछड़ने का प्रमुख कारण है। विषमता के इस आइने में देश की महिलाओं की हालत भी संतोषजनक नहीं है। विकास बनाम विषमता की यह स्थिति इसलिए बनी हुई है क्योंकि हमारे नीति–निर्माताओं ने सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर को एक मात्र विकास का आधार मान लिया है। भारत में मानव विकास को गंभीरता से नहीं लिया गया है और इसी का परिणाम रहा है कि हम गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं पर न केवल पिछड़ रहे हैं बल्कि इन सुविधाओं से वंचित आबादी का दायरा भी निरंतर बढ़ता जा रहा है। विचलित कर देने वाला प्रश्न यह है कि जहाँ एक ओर भारतीय अर्थव्यवस्था की संवृद्धि दर 7.5 प्रतिशत है, जो चीन के बाद विश्व में सर्वाधिक है, वहीं भारत मानव विकास में अपने पड़ोसी देशों से भी बहुत पीछे है। आखिर क्यों? इसका प्रमुख कारण यह है कि भारत शिक्षा व स्वास्थ्य पर अपनी जी.डी.पी. का बहुत कम हिस्सा खर्च कर रहा है। भारत स्वास्थ्य पर अपनी जी.डी.पी. का मात्र 1.3 प्रतिशत हिस्सा ही व्यय कर रहा है, जबकि भारत से आर्थिक रूप से बहुत पिछड़े देश नेपाल अपनी जी.डी.पी. का 2.6 प्रतिशत, श्रीलंका 1.4 प्रतिशत, ब्राजील 4.7 प्रतिशत, मारीशस 2.4 प्रतिशत तथ चीन 3.1 प्रतिशत व्यय करता है। भारत को इन देशों से सीख लेनी चाहिए कि कितना भी आर्थिक विकास कर ले बिना स्वास्थ्य सुविधाओं के मानव विकास की कल्पना नहीं की जा सकती।

मानव विकास में भारत के पिछड़ने का दूसरा कारण भारत द्वारा जी.डी.पी. का शिक्षा पर भी कम व्यय किया जाना है। भारत अपनी जी.डी.पी. का 3.9 प्रतिशत भाग शिक्षा पर व्यय करता है, जबकि नेपाल 4.1 प्रतिशत, ब्राजील 6.3 प्रतिशत, श्रीलंका 1.7 प्रतिशत, चीन 4.15 प्रतिशत व्यय करता है। सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि श्रीलंका का शिक्षा व स्वास्थ्य पर व्यय क्रमशः 1.7 प्रतिशत व 1.4 प्रतिशत हैं, जो कि भारत द्वारा अपनी जी. डी.पी. का शिक्षा व स्वास्थ्य पर व्यय क्रमशः 3.9 प्रतिशत व 1.3 प्रतिशत है, जो स्वास्थ्य पर तो मामूली ज्यादा है, जबकि शिक्षा पर व्यय तो भारत से बहुत कम है, फिर भी मानव विकास में श्रीलंका 0.757 अंक प्राप्त करके 73 वें स्थान पर है, जबकि भारत 0.633 अंक प्राप्त कर 134 वें स्थान पर ही अपनी जगह बना सका है। इस संदर्भ में श्रीलंका ने वास्तव में बहुत प्रशंसनीय काम किया है जिसकी शिक्षा व स्वास्थ्य पर व्यय करने की क्षमता बहुत कम है। मेरे इस शोध पत्र के ऊपर के कथनों में विरोधाभाष दिखता है और मैं इसी विरोधाभाष के माध्यम से ही बताना चाहता हूँ कि जी.डी.पी. का शिक्षा व स्वास्थ्य पर कम व्यय करके भी बेहतर परिणाम हासिल किया जा सकता है, जैसा कि श्रीलंका ने अपने बेहतर प्रबंधन एवं भ्रष्टाचार पर लगाम लगाकर किया है।

भारत में जनांकिकीय लाभांश –

भारत में इस समय जनांकिकीय लाभांश की स्थिति निर्मित है। जनांकिकीय लाभांश का आशय कुल जनसंख्या में से कार्यकारी जनसंख्या का भाग है। देश के समाने प्रश्न यह है कि क्या मानव विकास (अर्थात शिक्षा, स्वास्थ्य) के बिना जनांकिकीय लाभांश का दोहन किया जा सकता है? बिल्कुल नहीं, कल्पना भी नहीं की जा सकती है। भारत में कार्यकारी जनसंख्या (15 वर्ष से 64 वर्ष) 2001 में 60.1 प्रतिशत थी, जो बढ़कर 2006 में 62.9 प्रतिशत, 2016 में 67.1 प्रतिशत, 2026 में 68.4 प्रतिशत हो जाएगी। अतः भविष्य में भारत की प्रगति का इंजन तथा दुनिया की श्रमशक्ति का 'पावरहाउस' भारत की युवा आबादी ही होगी और भारत का युवा वर्ग ही देश की दशा व दिशा तय करेगा।

भारत में वर्तमान में 480 विश्वविद्यालय एवं 22000 कालेज हैं और 10 वर्षों में 700 विश्वविद्यालय एवं 35000 कालेज खेलने की योजना है, ताकि देश की युवा शक्ति शिक्षित व कार्यकुशल बन सके, लेकिन विश्व के 200 श्रेष्ठ विश्वविद्यालय में एक भी भारतीय विश्वविद्यालय का न होना एक प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है। विश्व के 200 क्षेष्ठ विश्वविद्यालयों में चीन के 2 विश्वविद्यालय हैं, जो इस बात की ओर इशारा करते हैं कि चीन शिक्षा की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दे रहा है। भारत पर शोध पर कम ध्यान दिया जा रहा है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (प्प्ज) एवं कुछ विश्वविद्यालयों को छोड़ दिया जाए तो भारतीय उच्च शिक्षा की दशा बहुत ही दयनीय है। भारतीय विश्वविद्यालयों में निगमन विधि ;क्मकनबजपअम डमजीवकद्ध के माध्यम से अध्ययन किया जा रहा है अर्थात निष्कर्ष पहले से दिया रहता है और उसका परीक्षण मात्र किया जाता है। इसमें हम किसी दूसरे की थ्योरी को प्रूफ करते है, थ्योरी का निर्माण नहीं, जबकि अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, रूस आदि देशों में आगमन विधि ;क्मकनबजपअम डमजीवकद्ध के माध्यम से अध्ययन किया जाता है। जिसमें थ्योरी का निर्माण होता है अर्थात नया अविष्कर होता है। विकसित देश शोध के माध्यम से ही बहुत पावरफुल ब्रेन तैयार करते हैं जो देश के विकास में अपनी महती भूमिका अदा करते हैं।

Research Findings And Conclusion -

1. मानव विकास सूचकांक 2022 की रिपोर्ट में भारत 0.633 अंक प्राप्त कर 134वें स्थान पर है जबकि भारत के पड़ोसी देश मलेशिया 0.807 अंक के साथ 63 वें, श्रीलंका 0.780 अंक के साथ 78वें, चीन 0.788 अंक के साथ 75वें, पायदान पर है। नेपाल, एवं पाकिस्तान ही भारत से निचले पायदान पर स्थिति है।
2. भारत में रिसाव प्रभाव ;ज्तपबासम क्वूद म्ممिबजद्ध काम नहीं कर रहा है क्योंकि आर्थिक संवृद्धि गरीबी को दूर नहीं कर पा रही है। आर्थिक संवृद्धि एवं गरीबी दोनों साथ–साथ बढ़ रहे है।
3. भारत अपनी जी.डी.पी. का शिक्षा (3.9:) एवं स्वास्थ्य (1.3:) पर बहुत कम व्यय कर रहा है जबकि भारत से आर्थिक रूप से कमजोर राष्ट्र श्रीलंका, नेपाल, मारीशस, ब्राजील एवं मलेशिया अपनी जी.डी.पी. का शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर भारत की तुलना में अधिक व्यय कर रहे हैं। इन्हीं के परिणामस्वरूप इनका मानव विकास सर्वाधिक है।

4. विश्व के 200 श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में भारत का एक भी विश्वविद्यालय नहीं है जो भारत के लिए कि अत्यन्त चिंता का विषय है।

5. भारत में कार्यकारी जनसंख्या (15 वर्ष से 64 वर्ष) 2016 में 67.1 प्रतिशत है, जो 2026 में 68.4 प्रतिशत हो जाएगी। अर्थात जनांकिकीय लाभांश की स्थिति बनी हुई है।

6. भारत से प्रतिभा पालायन (ठतंपद क्तंपद) बहुत ज्यादा हो रहा है और इसे रोका जाना बहुत जरूरी है।

7. श्रीलंका मानव विकास में भारत व चीन जैसे शक्तिशाली राष्ट्र को भी बहुत पीछे छोड़ दिया है।

Sugession -

1. भारत को आर्थिक संवृद्धि के साथ–साथ मानव विकास पर ध्यान देना होगा क्योंकि जनांकिकीय लाभांश का दोहन तभी किया जा सकता है जब शिक्षा एवं स्वास्थ्य (मानव विकास) पर पर्याप्त ध्यान दिया जाए।

2. भारत को अपनी शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर व्यय को बढ़ाना चाहिए क्योंकि स्वास्थ्य दिमाग में ही स्वास्थ्य विचार का निवास होता है और स्वस्थ्य विचार ही देश के विकास को गति प्रदान करता है।

3. भारत को समावेशी विकास ;प्दबसनपअम ळतवूजीद्ध के लिए गरीबी पर प्रत्यक्ष प्रहार करना होगा क्योंकि इसी से ही समावेशी विकास होगा एवं ट्रिकल डाउन इफेक्ट काम करेगा।

4. भारत व अन्य राष्ट्रों को श्रीलंका से सीख लेना चाहिए जिसने मानव विकास में भारत व चीन जैसे शक्तिशाली राष्ट्र को बहुत पीछे छोड़ा है। मानव विकास ही समस्त विकास का आधार है बिना मानव विकास के आर्थिक विकास की कल्पना नहीं की जा सकती।

References -

1. Tw schultz 'Investment in Human Capital' The American Economic Review. Vol 31, No. 1, March 1961

2. A.K. Sen ' Economic Approaches to education and Manpower planning' Indian Economic Review, New Series, Vol. 1, 1966

3. Gunnar Myrdal 'The challenges of world poverty' London 1970, P-229

4. Jean Dreze and Amartya Sen ' India : Economic Development and social opportunity' Delhi 1990

5. World Bank, world Development report 2005 : The state in a changing world, oxford university press, 2007

6. Chandra sekher, Cp, Ghosh Jayanti & Roychowdhury anamitra ' The Demographic divident and young India's Economic Future' EPW Dec. 9, 2006

7. Dutt Gaurav, Sundram KPM' Indian Economy' S Chand and company New Delhi, 2012

8. Undp ' Human Development Report 1996' New Delhi

9. Undp ' Human Development Report 2015' New Delhi

10. WHO Report 2011